22 स्मृति के आगे : सामाजिक विज्ञान में अर्थपूर्ण आकलन

जयश्री नांबियार



स्कूलों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण का कमजोर पहलू उसका आकलन है। आकलन यानी प्रचलित रूप में मूल्यांकन अक्सर–नाम और तारीखें, किसी काल की बताई गई विशेषताएँ, किसी घटना के कारण, घटना में घटित बातें, और किसी घटना के परिणाम, जो सबकुछ पाठ्यपुस्तकों में दिए गए होते हैं – को याद रखने और उसे स्मृति से तुरन्त पेश कर पाने की योग्यता का होता है। इस लेख में इसकी छानबीन करूँगी कि सामाजिक विज्ञान में हमें आकलन किन बातों का और कैसे करने की जरूरत है, और इसका उपयोग इतिहास के अध्ययन–अध्यापन में कैसे किया जा सकता है। मैंने इतिहास को चुना है क्योंकि मैं उससे परिचित हूँ। मैंने इसे इसलिए भी चुना क्योंकि इतिहास के पढ़ने और पढ़ाने का प्रायोगिक और रोजमर्रा की जिन्दगी से कोई लेना–देना नहीं होता। नागरिक शास्त्र और भूगोल में शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए प्रायोगिक सम्भावनाएँ देखना अधिक आसान होता है। अधिकांश लोग नागरिक शास्त्र को व्यवहार की तरह, और भूगोल को, विज्ञान के साथ उसके सम्बन्धों के चलते, प्रायोगिक विषय की तरह देख पाने में सक्षम होते हैं। मैं यह आशा जरूर करती हूँ कि इस लेख के दौरान अप्रत्यक्ष रूप से यह स्पष्ट हो जाएगा कि इन विषयों में से एक की समझ में अन्य दो के कुछ पहलू अपरिहार्य रूप से शामिल रहते हैं।

किन बातों का और कैसे आकलन करने की जरूरत है

अध्यापन को अविच्छिन्न रूप से सीखने से और आकलन से जोड़ा जाना जरूरी है। यदि मेरा उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी सीखना चाहिए ताकि प्रश्नों के उत्तर में वे उन बातों को स्मृति से तुरन्त निकालकर लिखने में समर्थ हो सकें जिनका उन्होंने किताब में अध्ययन किया है, तो अनिवार्य रूप से मेरा पढ़ाने का तरीका इसके अनुरूप होना चाहिए और होगा। मैं कक्षा को विस्तार से अध्याय समझाऊँगी और विद्यार्थियों को इस सामग्री में पारंगत होने के कौशल दूँगी ताकि पूछे जाने पर वे इस जानकारी को स्मृति से प्रस्तुत कर पाएँ। परन्तु, यदि मुझे विद्यार्थियों की सीखने और समझने की योग्यता का आकलन करना होता तो मैं उन्हें बहुत भिन्न कौशल और क्षमताएँ देती। मैं उन्हें सिखाती ध्यानपूर्वक अवलोकन करना, परिपूर्णता से पढ़ना, और जिसका अवलोकन किया जाता है या जो पढ़ा जाता है उस पर कैसे अन्त तक विचार करना। मैं उन्हें सवाल पूछना सिखाती और दिमाग खुला रखने के बारे में बात करती।

अवलोकन

इतिहास सीखने में अवलोकन एक प्रमुख कौशल है। जब आप एक नक्शे या चित्र का अवलोकन करते हैं तो वह जो कुछ दर्शाता है आप उसे ही प्रत्यक्ष रूप से स्वयं सीख रहे होते हैं, न कि किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा की गई उसकी व्याख्या को, चाहे वह किसी इतिहासकार या किसी पाठ्यपुस्तक लेखक के द्वारा की गई हो।

हम्पी के एक अध्ययन दौरे में विद्यार्थियों से कृष्णदेव राय के समय में महानवमी डिब्बा के चबूतरे की पट्टियों पर उकेरी गई दरबार के जीवन को दर्शाने वाली मूर्तियों को गौर से देखने के लिए कहा गया। एक भित्ति–शिल्प पेड़ों को जड़ से उखाड़ते हुए हाथियों को दिखाता है। एक अन्य, जब शिकारी तीर छोड़ते हैं तो हिरणों को तितर–बितर होते दिखाता है। एक सवाल जो अवलोकन करने वाले, और जो उन्होंने देखा उसके बारे में लिखने वाले तेरह वर्षीय बच्चों से पूछा गया वह है : हम्पी के विजयनगर की राजधानी बनने के पहले उसके प्राकृतिक परिवेश के बारे में तुम्हें क्या संकेत मिलता है? यह प्रश्न विद्यार्थियों को उकेरी गई तस्वीरों की ध्यानपूर्वक जाँच–पड़ताल करने के लिए, और स्वंय अवलोकन द्वारा इस सम्भावित तथ्य का – कि यह क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित था – अन्वेषण करने के लिए आमन्त्रित करता है।

हम्पी के भग्नावशेषों में ऐसी और कौनसी बात यह संकेत देती है कि उनका यह बोध सही था? अधिकांश निर्मित संरचनाएँ किसी ऊपरी ढाँचे से रहित आधार मात्र हैं जिनमें गड्ढे हैं, जिसका मतलब हो सकता है कि वहाँ नियमित दूरी पर खम्भे रहे हों। क्या ऐसा हो सकता है कि वे खम्भे लकड़ी के बने हों?क्या खम्भे इसलिए वहाँ नहीं हैं कि वे लकड़ी के बने थे और उन्हें जला दिया गया होगा या लूटकर ले जाया गया होगा?क्योंकि यह हमें ज्ञात है कि तालिकोटा के युद्ध के बाद विजयनगर की राजधानी छः दिनों तक जलती रही और उसे बाद में लूटा खसोटा गया। इस प्रकार, प्रारम्भिक अवलोकन को एक अन्य स्थिति में उपयोग किया जाता है और फिर एक तीसरे स्रोत के माध्यम से जानकारियों को आपस में जोड़ा जाता है और उनकी पुष्टि की जाती है। इस तरह विद्यार्थियों ने सीखने की कला सीखी है और इस सीखने को वे अपने अध्ययन और जीवन, दोनों के अन्य प्रसंगों और स्थितियों में उपयोग कर सकेंगे।

अवलोकन करने और सम्बन्ध जोड़ने के यही कौशल मैसोपोटेमिया

के बारे में सीखने के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। उस क्षेत्र का नक्शा पहाड़ियों से भूतल पर खाड़ी की ओर बहती हुई दो नदियाँ दर्शाता है। नदी के किनारे के क्षेत्र निचले तल पर हैं और काफी दूर पीछे पहाड़ियाँ हैं। नजदीकी जाँच–पड़ताल और अनेक प्रश्नों से विद्यार्थियों को वहाँ के मुख्य व्यवसाय, स्थानीय अर्थव्यवस्था, निर्माण में इस्तेमाल होने वाली सामग्री और युद्धों की आवृत्ति के बारे में समझने में मदद मिलेगी। यहाँ विद्यार्थियों को अवलोकन करने और अवलोकनों को अपने अनुभव और मानव जीवन के ज्ञान के ढाँचे में जमाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ से वे निष्कर्ष निकालते हैं जिनकी फिर वे पुष्टि कर सकते हैं या खारिज कर सकते हैं।

अब मैं युवा विद्यार्थियों का सरल ढंग से मानवाधिकारों से परिचित कराने वाली, एक अनूठी किताब की बात करूँगी जिसका नाम है ''वी आर बॉर्न फ्री (हम स्वतंत्र जन्मे हैं)''। यह किताब मुझे एक संयोग से मिली। इसमें एक चित्रकार कहता है कि किसी पर भी गलत करने का आरोप, उससे पूछे बिना, नहीं लगाया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए वह एक चित्र बताता है जिसमें फूलों की डाली हाथ में लिए एक बच्ची और फर्श पर गिरा हुआ एक फूलदान दिखाया गया है। फर्श पर फूलदान से गिरा पानी तथा फूलों की और डालियाँ हैं। बच्चे के बगल में वयस्क लोगों की टाँगों के दो जोड़े हैं। इस तस्वीर का अवलोकन और उस पर चर्चा, विद्यार्थियों को मिलते–जुलते अनुभवों की याद दिलाने में सहायक हो सकते हैं। वे हमें बता सकते हैं कि हम कैसे आसानी से निर्णय ले लेते हैं, और वे हमें हमारे पूर्वाग्रहों का बोध करा सकते हैं। ऐसे प्रश्न जैसे, 'क्या तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है?', 'याद करो जब तुमने किसी को गलत समझ लिया हो', 'कोशिश करो और सुझाओ कि यह कैसे हुआ होगा'। 'विज्ञापन, धारावाहिक और लोकप्रिय फिल्में किस तरह गलत बातों या दुष्टता को चित्रित करती हैं?' इस प्रकार मानवाधिकार को एक अर्थपूर्ण ढंग से सीखा और समझा जाता है।

इन तीन उदाहरणों में जिन बातों को पढ़ाया, सीखा और और उनका आकलन किया जाता है, वे अवलोकन करने और सम्बन्ध जोड़ने के, और उपयोग करने के कौशल हैं। साथ ही उनमें अपनी जानकारियों की पुष्टि करने की जिम्मेदारी है। कौशलों के इस सिखाने में, विषयवस्तु को एक प्रकार से प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से सीखा जाता है। इसलिए, सिखाना और सीखना एक साथ घटित होते हैं, और सीखने के कृत्य में ही आकलन होता है। यहां आकलन एक निष्कर्षात्मक वक्तव्य नहीं होता, बल्कि उसका सूचक होता है जो आगे और पढ़ाया और सीखा जाना जरूरी है। यही अनिवार्य रूप से आकलन की भूमिका होना चाहिए।

कैसे विचार करना

इतिहास के पढ़ाने–सीखने का सबसे जटिल पहलू सही ढंग से सोचना है। तथ्य पुराणकथाओं, किवदंतियों और अभिमतों में लिपटे रहते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि प्राकृतिक या सामाजिक क्रियाकलापों की व्याख्या करने वाली अलौकिक प्राणियों वाली कहानियों और किसी खास ऐतिहासिक स्थान या व्यक्ति के बारे में एक पारम्परिक अपुष्ट कहानी में फर्क किया जाए। और इन दोनों तथा प्राचीन घटनाओं वाली ऐसी कहानियों में फर्क किया जाए जो साक्ष्यों से पुष्ट की जा सकती हैं।

किसी अभिमत को साक्ष्य पर आधारित ऐतिहासिक 'तथ्य' से अलग करना कहीं ज्यादा कठिन होता है। जब एक पाठ्यपुस्तक दिल्ली सल्तनत के शासक के बारे में कहती है कि, 'रजिया की कमजोरी उसका औरत की तरह पैदा होना थी', या 'अशोक ने अहिंसा का उपदेश देकर देश को कमजोर किया', तो शिक्षक के लिए यह जरूरी है कि वह ऐसे वक्तव्यों का विश्लेषण करे, उन्हें सन्दर्भ से जोड़े और विद्यार्थियों को इन वक्तव्यों पर पूरी तरह से विचार करने का तरीका सुझाए।

इसके बाद, हम देखते हैं कि पाठ्यपुस्तक में कुछ तथ्यों को जगह देने और अन्यों को छोड़ देने से अतीत की और मानव जीवन की एक खास तस्वीर बनती है। राष्ट्रवाद अतीत की एक आंशिक व्याख्या पर आधारित होता है, और इतिहास को किसी क्षेत्र या राष्ट्र की विशिष्ट पहचान गढ़ने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कुछ चुने हुए आन्दोलनों, लोगों और तथ्यों का सीखना एक विशेष वैश्विक दृष्टि निर्मित करता है। इतिहास की पुस्तकों में ऐसा अध्याय मिलना कोई अनोखी बात नहीं है जिसे इस्लाम का आगमन कहा जाता है, और जिसमें गजनी और गौरी के हमलों और उन लड़ाइयों और बर्बरताओं का वर्णन होता है जो उत्तर के गंगा के मैदानों में हुईं। पर उन्हीं किताबों में मलाबार तट पर वर्षों से रह रहे जनसमूहों के शान्तिपूर्ण जीवन का लगभग कोई उल्लेख नहीं होता। यह खतरनाक प्रवृत्ति है कि विजय और टकराव का अध्ययन इतिहास की समझ की तरह स्वीकृत हो जाता है और जनसमूहों को खास ढंगों से चित्रित कर दिया जाता है। अतीत और मानव जीवन के बारे में यह विद्यार्थियों को कैसा दृष्टिकोण प्रदान करेगा?

विश्व का इतिहास अधिकतर यूरोप और अमरीका के युद्धों व टकरावों के इर्द गिर्द घूमता है। इस तरह जोर देने से, संसार के कुछ भागों को प्रमुखता हासिल हो जाती है, तथा मन में यह बैठ जाता है कि युद्ध और टकराव ही ऐतिहासिक स्मृति के योग्य हैं। विद्यार्थियों के विकसित हो रहे दिमागों में बहुत जोर से यह अनकही बात बैठ जाती है कि युद्ध मानव जीवन का अपरिहार्य अंग है।

पाठ्यपुस्तकों में जाति और स्त्रियों के साथ किस प्रकार बुरा बर्ताव किया जाता था, इसके बारे में दिए गए वक्तव्य अक्सर ऐसे मुद्दों को ढंक देते हैं जो रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करते हैं, और जिनकी आलोचनात्मक जाँच–पड़ताल जरूरी है। ऐसे व्यापक वक्तव्यों में इतिहास के महत्वपूर्ण पहलू छिपे रहते हैं जिन्हें समझे जाने की जरूरत है। हम जो देखते हैं और पढ़ते हैं उसके, तथा जो देखा, पढ़ा, अनुभव किया और सोचा जाता है उसके बीच के अन्तरों के बारे में इतिहास की कक्षाओं में सवाल उठाए जाना चाहिए। इन फासलों की पड़ताल करने में ही असली सीखना घटित होता है।

> *सिखाना और सीखना एक साथ घटित होते हैं, और सीखने के कृत्य में ही आकलन होता है। तब मूल्यांकन एक निष्कर्षात्मक वक्तव्य नहीं होता, बल्कि उसका सूचक होता है जो आगे और पढ़ाया और सीखा जाना जरूरी है। यही अनिवार्य रूप से आकलन की भूमिका होना चाहिए।*

इसके अलावा, कक्षा में किसी ऐतिहासिक तथ्य को सन्दर्भ में देखने के लिए विद्यार्थियों की मदद की जाना जरूरी है। इतिहासकार ने विवरण किस काल में लिखा? क्या किसी विशेष वैचारिक दृष्टिकोण का प्रमाण मिलता है? जिस काल में उसने लिखा तब तत्कालीन राजनैतिक, आर्थिक, और सामाजिक स्थिति क्या थी?लिखने का उसका उद्देश्य क्या था? इस प्रकार यह देखना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि इतिहास एक बाह्य यथार्थ को निरूपित करता हुआ प्रतीत होता है, वास्तव में हम प्रतिरूपों के साथ काम कर रहे होते हैं– ऐसे आख्यान जो प्रमुख समूह के दृष्टिकोण, वर्ग, नस्ल या लिंग के आधार पर निर्धारित होते हैं। मनुष्य की चेतना उन धारणाओं, मूल्यों और सोचने के तरीकों से तथा भावनाओं से निर्मित होती है जिनके द्वारा मनुष्य देखते हैं और जिनके सहारे वे उसकी व्याख्या करने की कोशिश करते हैं जिसे वे यथार्थ समझते हैं।

जो बात विद्यार्थी के लिए जरूरी है, वह है इतिहास की समृद्ध जटिलता का स्वाद लगना। इसलिए जो पढ़ाए जाने, सीखने और आकलन किए जाने की जरूरत है, वह विद्यार्थी की साक्ष्य के आधार पर निष्कर्ष निकालने की क्षमता है। साथ ही यह समझने की क्षमता कि यह निष्कर्ष अस्थायी तौर पर माना जाए क्योंकि यह न केवल उपलब्ध साक्ष्य से बनता है, बल्कि चीजें कैसी हैं और कैसी होना जरूरी हैं, इसके बारे में व्यक्ति के विचारों से भी बनता है। विद्यार्थी को कई, और कभी–कभी विरोधी, आख्यानों और भिन्न–भिन्न मतों को बिना टकराव के ग्रहण करना सीखने की जरूरत है। क्या सोचना सिखाने की अपेक्षा किस तरह सोचना सिखाना शिक्षक के लिए ज्यादा जरूरी है।

यह कैसे किया जाए? एक गतिविधि जो अक्सर विद्यार्थियों को दी जाती है, वह 'बरतन गड़ाना' है। कक्षा को विद्यार्थियों के दो समूहों में बाँट दिया जाता है। किसी मकान या ढाँचे के किसी खास खण्ड को ध्यान में रखकर प्रत्येक समूह कुछ चीजें इकट्ठी करता है, उन्हें एक बरतन में रखकर गड़ा देता है। दूसरा समूह दिए गए नक्शे, या बनाए गए टीले को देखकर बरतन को खोज निकालता है। फिर इस खोज की साक्ष्य की तरह पड़ताल करके इस उपलब्ध 'साक्ष्य' से रहने वालों के काल और जीवनशैली के बारे में निष्कर्ष निकालता है। साक्ष्य और प्रमाण को कक्षा के सामने प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कुछ बातें स्पष्ट हो जाती हैं। कभी उसमें त्रुटिपूर्ण सोच होती है क्योंकि किसी चीज की पर्याप्त जाँच–पड़ताल नहीं की गई थी या विचार की प्रक्रिया पूर्ण नहीं थी। कभी सोच पक्षपातपूर्ण होती है यदि वह विद्यार्थी की आज की वास्तविकता पर आधारित होती है, और शायद उसमें अपर्याप्त कल्पना की गई हो। अन्त में, यह भी देखा जा सकता है कि बरतन गड़ाने वाले विद्यार्थियों का इरादा और दूसरे समूहों के विद्यार्थियों द्वारा निकाला जाने वाला निष्कर्ष हो सकता है कि समान न हों।

एक ही विषय पर उपलब्ध अनेक प्रकार की सामग्री – उस काल का कोई दस्तावेज, अखबार का कोई समकालीन लेख, अलग–अलग समय पर लिखने वाले दो इतिहासकारों के भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण – की पड़ताल करना भी पढ़ाने का एक उत्कृष्ट उपकरण हो सकती है। उनमें क्या अन्तर हैं? अन्तरों के कारणों की तलाश हमें सिखा सकती है कि कैसे सोचना चाहिए। इसी प्रकार से, वर्तमान घटनाओं को प्रतिबिम्बित करने वाले अखबार भी इतिहास के अध्ययन की प्रभावशाली सामग्री होते हैं! क्यों सभी अखबार मुखपृष्ठ पर छापने के लिए उन्हीं खबरों को चुनते हैं? ये घटनाएँ क्यों महत्वपूर्ण मानी जाती हैं? हर खबर किस तथ्य पर आधारित है?खबरें किस तरह से एक–दूसरे से भिन्न होती हैं? कैसी घटनाओं की खबरें सबसे कम छपती हैं?

विकृतियों, छोड़ दिए गए पहलुओं और अन्तरों को विचार करना सीखने की सीढ़ियों की तरह इस्तेमाल करना महत्वपूर्ण है। कभी–कभी पूरा इतिहास या सीखा जाने वाला कोई गम्भीर सबक एक शब्द के इस्तेमाल में समाया रहता है, उदाहरण के लिए शब्द 'खोजा' को लें। जब हम पढ़ते हैं कि कोलम्बस ने अमरीका को 'खोजा', तब हमें यह पूछने की जरूरत है कि यह कहने वाला कौन है, और कोलम्बस ने उसे किसके लिए खोजा क्योंकि वहाँ पहले से

ही लोग रह रहे थे। इस एक शब्द में सत्ता का इतिहास, एक समृद्ध और भिन्न इतिहास के गायब हो जाने के कारण, उसका विलोप और जबरदस्ती मिला लिया जाना सभी कुछ समाया हुआ है। एक और मिसाल लें तो शब्द 'आदिम' में हीन और अज्ञानी होने के भाव छिपे हैं, और 'प्रगति' में सकारात्मक भाव शामिल हैं। इन अकेले शब्दों में निहित वैश्विक दृष्टियाँ चलती रहेंगी और युवा विद्यार्थी भी उनसे अलग नहीं सोचेंगे जब तक वे इन शब्दों और अवधारणाओं पर सवाल उठाना और उनकी पड़ताल करना नहीं सीखते।

> *विद्यार्थी को कई, और कभी–कभी विरोधी, आख्यानों और भिन्न–भिन्न मतों को बिना टकराव के ग्रहण करना सीखने की जरूरत है। क्या सोचना सिखाने की अपेक्षा किस तरह सोचना सिखाना शिक्षक के लिए ज्यादा जरूरी है।*

पाठ्यसामग्री से परिचित होने के द्वारा और सवालों के द्वारा विद्यार्थी सोचना सीखते हैं। जब कोई विद्यार्थी जानता है कि वह स्वयं विचार कर सकता है तो उसमें बहुत आत्मविश्वास आ जाता है। आमतौर पर स्कूल में शिक्षा आपको सिखाती है कि क्या सोचना है, न कि कैसे सोचना है। विचार करने के द्वारा ही विद्यार्थी सृजनात्मक मनुष्य बनते हैं न कि दोहराने वाली मशीनें। विचार करने की इस क्षमता को ही हमें पोषित करने की और उसका आकलन करने की जरूरत है।

प्रश्न पूछना

अवलोकन और विचार करना सीखने के माध्यम से विद्यार्थी अतीत की समझ और इतिहास की प्रक्रियाओं के बारे में अन्तदृर्ष्टियाँ हासिल करता है। इतिहास को सीखने का मतलब यह समझने की कोशिश करना है कि समाज कैसे काम करते हैं, और यह भी देखना कि यह समझ आज की घटनाओं को समझने के लिए भी उतनी ही उपयोगी है। इतिहास इसीलिए अतिमहत्वपूर्ण है कि यह वर्तमान को समझने के तरीकों में भी हमारी मदद करता है, और इसके कौशल रोजमर्रा के जीवन में सामने आने वाली स्थितियों और जानकारी पर भी लागू होते हैं। आवेगपूर्ण और बिना जाने समझे जल्दबाजी में निर्णय करने और निष्कर्ष निकालने की अपेक्षा, ऐसा सीखना विद्यार्थी को सीखने और मूल्यांकन करने के जो औजार उसके पास हैं उन्हें पैना करने के और इस्तेमाल करने के काबिल बनाता है।

इसे कैसे सिखाया, सीखा और इसका आकलन किया जाए? यदि इतिहास वर्तमान को समझने का एक तरीका है, तो वर्तमान ही इसके लिए एक अच्छा प्रारम्भिक बिन्दु होता है। कक्षा में एक बहस यह प्रश्न पूछने से शुरू हो सकती है कि भारत के स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अँग्रेजी क्यों है?भारतीय स्कूलों में छात्राएँ पिनाफोर, टाई और जूते मोजे क्यों पहनती हैं? हमारी आज की कक्षा का स्वरूप गढ़ने में बचपन के बारे में किन विचारों और वयस्कों की कौनसी चिन्ताओं की भूमिका होती है?इस सबसे हम ऐसे इतिहास पर पहुँचते हैं जो प्रासंगिक है।

इतिहास की किसी कक्षा का पाठ्यक्रम भी विद्यार्थी को उसके प्रश्नों से शुरू करने की छूट देता है। पाठ्यक्रम में दिए गए अध्याय 'ब्रिटिश सत्ता का उत्थान और विकास, ब्रिटिश सत्ता का उत्कर्ष, ब्रिटिश सत्ता का सुदृढ़ीकरण' विद्यार्थियों में ऐसे प्रश्न उकसा सकते हैं, जैसे कि – अँग्रेज भारत क्यों आए?, यदि भारतीय इतने अधिक थे तो कैसे थोड़े से अँग्रेजों ने सत्ता हासिल कर ली और उसे बढ़ाकर सुदृढ़ भी कर लिया? जो हो रहा था उसके प्रति भारत के लोगों की क्या प्रतिक्रिया थी? ये अति आवश्यक प्रश्न हैं, और सीखना वहीं से शुरू होता है जहाँ विद्यार्थी हैं। अतीत के माध्यम से वर्तमान को समझने की जरूरत के चलते कुछ अन्य प्रकार के प्रश्न भी उठ सकते हैं जिनसे बहस छिड़ सकती है – हम उस भावनात्मक उफान को कैसे समझें जिसके परिणामस्वरूप अयोध्या में बाबरी मस्जिद का विध्वंस हुआ?

अतीत और वर्तमान के बीच का अन्तर्सम्बन्ध जितना स्वाभाविक है उतना ही अनिवार्य भी है। यहाँ मध्यकालीन और प्रारम्भिक आधुनिक भारत का वर्ष भर तक अध्ययन करने के बाद उठे कुछ ऐसे प्रश्न दिए जा रहे हैं जो विद्यार्थियों को सोचने, सम्बन्ध जोड़ने और निबन्धात्मक उत्तर देने में मदद करेंगे :

सत्ता के लिए संघर्ष

भूमिका : आप 'सत्ता' को कैसे समझते हैं? किसी राजा को सत्ता की जरूरत क्यों होती है?

और प्रश्न

- कौनसी विशेष स्थितियों में एक राजा को अपने आप को सिद्ध करना पड़ता है? (राजपूतों के उत्पत्ति के सिद्धान्त, कुत्बुद्दीन ऐबक, बाबर और हुमायूँ, शिवाजी)
- एक राजा अपनी सत्ता कैसे बनाए रखता है?;चोल राजागण, बल्बन, अलाउद्दीन खिलजी, कृष्णदेव राय, अकबर, औरंगजेब)

- स्वयं राजाओं पर सत्ता का क्या प्रभाव पड़ता है? (अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक, जहाँगीर और शाहजहाँ) सत्ता का यह संघर्ष दूसरों के साथ सम्बन्धों को कैसे प्रभावित करता है और स्वयं व्यक्ति के भीतर क्या होता है?
- यहाँ दुख की बात क्या है? (रजिया, बहमनी राजागण, मुगलों के बीच में उत्तराधिकार के युद्ध, औरंगजेब का सिंहासन पर आरूढ़ होना)

निष्कर्ष :

आपने जो अध्ययन किया है उसपर अपने खुद के विचार लिखें।

आकलन कार्य

यदि मूल्यांकन के लिए दिया गया कार्य कोई गतिविधि, सामूहिक कार्य या क्षेत्र–भ्रमण नहीं है, बल्कि एक लिखित परीक्षा है, तो ऐसे कुछ सम्भावित कार्य क्या हो सकते हैं? अब तक जो कहा गया है उस पर आधारित, बेतरतीबी से चुने गए कुछ कार्य :

प्रश्न 1:

प्राचीन मिस्र में मकबरे के भीतर चित्रांकन करके बनाई गई इस तस्वीर का निरीक्षण करो और निम्न सवालों के उत्तर दीजिए :

यहां आप लोगों को किन तीन गतिविधियों में रत देखते हैं?

इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों का वर्णन करिए।

आपके विचार में लोगों को अलग–अलग आकार का क्यों दिखाया गया है? अपने कारण समझाएँ।

प्रश्न 2:

नीचे एक अखबार से ली गई खबर दी गई है। इसमें किस मानवाधिकार का उल्लेख है? अधिकार बताइए और यह समझाइए कि यहाँ कैसे उसका उल्लंघन हुआ है।

प्रश्न 3:

यहाँ कलकत्ता की 'ब्लैक होल (काल कोठरी)' की घटना के बारे में दो इतिहासकारों के विवरणों के अंश हैं। लेखकों के विवरणों में क्या समानताएँ हैं? इनके आधार पर आप किन बातों को तथ्य की तरह मान सकते हैं?

प्रश्न 4:

दिए गए नक्शे में एक क्षेत्र को चिन्हित किया गया है। नक्शे का ध्यानपूर्वक अध्ययन करो और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

- वहाँ के लोगों का व्यवसाय क्या होगा? क्यों?
- वे फुर्सत के समय में किन गतिविधियों में संलग्न रहते होंगे? तुम्हें इसका संकेत किस बात से मिलता है?
- इस क्षेत्र में व्यापार एक महत्वपूर्ण गतिविधि क्यों हो सकती है?
- इसका किन क्षेत्रों से सम्पर्क रहा हो सकता है?
- आप इस क्षेत्र में किन फसलों के पैदा होने का अनुमान लगा सकते हैं?

अपने कारण बताइए।

उपरोक्त कार्यों में तीन बातें स्पष्ट हैं। पहली, विद्यार्थी के लिए किसी दी गई तस्वीर, नक्शे या पाठ्यांश को पढ़ना या उसका बारीकी से अध्ययन करना आवश्यक होता है। फिर इस जानकारी को उसे ज्ञान के उस ढाँचे में समायोजित करना पड़ता है जो उसके पास पहले से है, और उसे स्पष्टतापूर्वक विचार भी करना होता है। दूसरी, इन कार्यों के दौरान वह उत्तर का निर्माण करने वाला बन जाता है, और उसपर आत्मविश्वास के साथ काम करता है। तीसरी, और सबसे महत्वपूर्ण बात है कि विद्यार्थी इस अभ्यास के द्वारा कौशल और ज्ञान में कुछ नया सीखता है या कोई अन्तर्दृष्टि हासिल करता है। आकलन का कोई भी ऐसा काम जिससे विद्यार्थी कुछ नहीं सीखता या तो अधूरा होता है या अर्थहीन।

आकलन से परे

सामाजिक विज्ञानों में आकलन को अर्थपूर्ण कैसे बनाया जा सकता है, इस बारे में यह सब कहने के बाद, अब मैं यह कहना चाहती हूँ कि सामाजिक विज्ञानों के द्वारा जो सबसे जरूरी बातें सिखाई और सीखी जाना चाहिए उनका आकलन नहीं किया जा सकता।

सामाजिक विज्ञानों से हासिल किया जाने वाला सबसे आवश्यक ज्ञान सही तरीके से जीना और सम्बन्ध बनाना सीखना – मौन, अनिर्णायक निरीक्षण करना सीखना; विचारधाराओं के काम करने और शब्दों, विचारों व घटनाओं के प्रति हमारी तंत्रिकात्मक और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का बोध विकसित करना; विभिन्न दृष्टिकोणों को बिना टकराव के अपने मन में रख सकना सीखना – होना चाहिए। रोजमर्रा की वास्तविकताओं के साथ स्पष्टतापूर्वक जूझने में और यह पूछने में कि हमारी ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं, इस ज्ञान को हमारी सहायता करना चाहिए, इसे हमें पूर्वाग्रहों से मुक्त करना और आत्मनिरीक्षण करने के लिए आधार निर्मित करना चाहिए।

मेरी दृष्टि में सामाजिक विज्ञान के सीखने का लक्ष्य दोहरा है। एक तो किसी अन्य स्थान और समय के मानवीय क्रियाकलापों के द्वारा हमें यहाँ और अभी अपने बारे में जानना सिखाना है। दूसरे, अपने चारों ओर के मानवीय, जीव–जन्तुओं के और प्राकृतिक परिवेश के साथ सम्वेदनशील सम्बन्ध बनाने में हमें सक्षम बनाना है। ज्ञान और कौशल तभी मूल्यवान होते हैं जब वे फिक्र और जिम्मेदारी के रिश्ते में जुड़े हुए हों। और यह आकलन के परे है।

जयश्री नांबियार *चेन्नई के द स्कूल,कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन ऑफ इण्डिया में अँग्रेजी और इतिहास पढ़ाती हैं, और वर्तमान में वे इस स्कूल की प्रधानाचार्य हैं। उनसे इस jayashree.nambiar@gmail.com ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*